IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 2, Issue 1, July 2022
Impact Factor: 6.252

हिंदी भक्ति साहित्य में पर्यावरण चेतना

डॉ. राकेश कुमार गौतम

हिंदी विभाग

प्राचार्य, यमुना प्रसाद शास्त्री स्नातकोत्तर महाविद्यालय सेमरिया, रीवा, म.प्र.

सारांश:

हिंदी भक्ति साहित्य में पर्यावरण चेतना आध्यात्मिकता और प्रकृति के अटूट संबंध से उभरती है। भक्ति काल के कवि जैसे कबीर, तुलसीदास, सूरदास, रहीम, जायसी और मीरा ने अपनी रचनाओं में प्रकृति को ईश्वरीय सृष्टि के रूप में चित्रित किया है, जहाँ वन, नदी, पर्वत, पशु-पक्षी और पंचतत्व (पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश) को पूजनीय माना गया है। यह चेतना मानव-प्रकृति के संतुलन पर जोर देती है, जहाँ पर्यावरण संरक्षण भक्ति का अभिन्न अंग है। शोध में भक्ति साहित्य के ग्रंथों का विश्लेषण किया गया है, जो आधुनिक पर्यावरणीय संकटों के समाधान के रूप में प्रासंगिक है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि भक्ति साहित्य न केवल पर्यावरण प्रेम को प्रेरित करता है, बल्कि उसके संरक्षण के लिए नैतिक दायित्व भी स्थापित करता है। यह पेपर वैदिक परंपरा से लेकर भक्ति काल तक की यात्रा का परीक्षण करता है, जिसमें पर्यावरण को दिव्यता का स्वरूप मानकर उसकी रक्षा की अपील की गई है।

कीवर्ड्स:

भक्ति साहित्य, पर्यावरण चेतना, तुलसीदास, कबीर, पंचतत्व, प्रकृति संरक्षण, आध्यात्मिकता, ईश्वरीय सृष्टि, हिंदी काव्य, पर्यावरण विमर्श